यादों ने बनाया कलम की रानी

रंजीता बिस्वास

साभार: चित्रा बी. दिवाकरुनी

भारतीय मूल की अमेरिकी लेखक चित्रा दिवाकरुनी का मानना है कि उन्हें लेखक बनाने में अमेरिका का बड़ा हाथ है। औरतों की भूमिका को देखने का नजरिया वहीं बदला।

बहुपुरस्कृत उपन्यासकार चित्रा बी. दिवाकरुनी को सपनों में भी इस बात का ख्याल नहीं था कि उनके अंदर कहीं एक किस्सागो बसता है। कोलकाता की यह 19 वर्षीय लड़की उच्च अध्ययन के लिए पहली बार देश की सीमा लांघ कर अमेरिका पहुंची। दूसरे देश में तालमेल बिठाने के बारे में उसे कई बार भाषण पिलाए गए थे लेकिन ओहियो के मक्का के खेतों में वह खुद को अजनबी पाती। उसे अपने घर की याद सताती रहती। फिर उसके दादा नहीं रहे जिनसे उसे बहुत लगाव था। चित्रा याद करती हैं, ''मैं घर नही जा पाई थी। बिस्तर पर लेटी मैं सोचने की कोशिश करती कि वहां क्या हो रहा होगा, लेकिन कुछ सोच न पाती। लिखने से मैं अपनी दुनिया को याद कर पाती थी, इसलिए लिखने लगी। मैं शुद्ध रूप से अपने लिए लिख रही थी। मैंने सोचा भी नहीं था कि कभी लिखना ही मेरा करिअॅर बन जाएगा। अमेरिका ने मुझे लेखक बनाया, एक एकदम अलग संस्कृति में जीते हुए मैं अचानक बदल गई थी। इस अनुभव ने मुझे सवाल उठाना सिखाया, खासतौर पर औरतों की भूमिका को लेकर मैं चीजों को नए ढंग से देखने लगी।''

चित्रा और उन्हीं की तरह दो संस्कृतियों और परस्पर विरोधी वफादारियों की रस्साकशी में फंसे लोगों के अकेलेपन और स्पष्ट रूप से अल्पसंख्या वाले वर्ग का सदस्य होने का अनुभव उनके कहानी संग्रह 'अरेंज्ड मैरेज' में संकलित है। इस संग्रह को 1996 में अमेरिकन बुक अवार्ड के साथ ही कई अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए। बिक्री के रिकॉर्ड बनाने वाली उनकी अन्य किताबों में उपन्यास 'सिस्टर ऑफ माई हार्ट' और 'द मिस्ट्रेस ऑफ स्पाइसेज' और कहानी संग्रह 'द अननोन एरर्स ऑफ अवर लाइव्स' शामिल हैं। चित्रा कविताएं और बाल साहित्य भी लिखती हैं।

लेखक के रूप में चित्रा जादुई यथार्थ की प्रशंसक हैं। उन्हें लगता है कि भारतीय लोककथाओं और अमेरिकी मूल निवासियों की लोककथाओं में बहुत- सी समानताएं हैं। ''खासतौर पर विशेष शक्तियों से इलाज करने वालों के मामले में। दोनों संस्कृतियों में उनकी विशिष्ट भूमिका है और मेरे उपन्यासों 'मिस्ट्रेस ऑफ स्पाइसेज' और 'क्वीन ऑफ ड्रीम्स' में वे केंद्रीय चरित्र हैं।''

आजकल चित्रा महाभारत के चरित्रों पर केंद्रित उपन्यास के लिए शोध कर रही हैं। वह बताती हैं, ''यह महिलाओं की कहानी होगी जिसे द्रौपदी के जरिये कहलवाया जाएगा। मैं इस महाकाव्य के अन्य स्त्री चरित्रों के विभिन्न आयामों को देखना-दिखाना चाहती हूं।''

स्त्रियों के जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों से द्रवित होकर चित्रा और उनकी कुछ मित्रों ने एक संगठन मैत्री की स्थापना की। यह संगठन अमेरिका में दक्षिण एशियाई महिलाओं के लिए सहायता समूह के रूप में काम करता है। कैलिफोर्निया में महिलाओं के लिए बने शरणगृहों में स्वयंसेवक के रूप में काम करते हुए उन्हें घरेलू हिंसा जैसी समस्याओं की व्यापकता समझ में आई। वह बताती हैं, ''एक दिन शरणगृह में एक भारतीय स्त्री आई- दुबली-पतली, बहुत सुंदर और बेहद डरी हुई। वह बार-बार कह रही थी ''अमेरिका में मेरा गुजारा कैसे चलेगा? मैं महज एक पत्नी हूं।'' चित्रा कहती हैं, ''उसने किसी तरह हमारे पास आने की हिम्मत तो जुटा ली थी लेकिन जब उसका पति उसे ले जाने के लिए आया तो वह उसके साथ चली गई। फिर वह कभी नहीं दिखी। उसका चेहरा आज भी मेरी आंखों में बसा है।''

अपनी मातृभूमि छोड़कर परदेस चली आई और पीड़ाजनक संबंधों में छटपटाती ऐसी ही दक्षिण एशियाई महिलाओं के लिए 1991 में मैत्री की हॉटलाइन शुरू हुई। आज इस संगठन की शाखाएं पूरे अमेरिका में फैली हैं। मैत्री नौकरियां ढूंढने में मदद करती है, छात्रवृत्तियां प्रदान करती है, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने में स्त्रियां की सहायता करती है और जरूरतमंद महिलाओं को रहने के लिए जगह भी उपलब्ध कराती है। यह किशोरों में हिंसा की प्रवृत्ति को रोकने की दिशा में भी काम करती है। चित्रा कहती हैं, ''घरेलू हिंसा सब जगह मौजूद है, इसका किसी देश में तकनीकी विकास से कोई लेना- देना नहीं है।''

चित्रा अब अमेरिकी नागरिक हैं और टेक्सास में यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन में रचनात्मक लेखन और समकालीन भारतीय साहित्य पढ़ाती हैं। उनके दो बेटे हैं जो उन्हें बच्चों की किताबों के लिए अक्सर बढ़िया आइडिया देते हैं। अपने परिवार की भारतीयता को बनाए रखने की कोशिश करते हुए वह भारतीय और अमेरिकी संस्कृति के बीच संतुलन बिठाती रहती हैं। ''किसी और देश में रहने से आपको बहुत कुछ सीखने का अवसर मिलता है... लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि आप अपनी सांस्कृतिक जड़ों को भूल जाएं। चित्रा कहती है कि यूं तो वह अपने बेटों को अपनी पसंद चुनने की छूट देती हैं लेकिन समय होने और जरूरत पड़ने पर उन्हें हिदायत भी देती हैं। उन्हें बेकार पार्टियों और नशीले पदार्थों से दूर रहने और मेहनत और ईमानदारी पर जोर देती हैं।'' वह चाहती हैं कि उनके बच्चे सभी नस्लों के लोगों से दोस्ती करें।

क्या अपने रचे कुछ चरित्रों की तरह वह भी खुद को अमेरिका में बाहरी इंसान पाती हैं? ''इसका जवाब हां भी है और नहीं भी, अमेरिका में बहुत-से देशों से आए समुदाय हैं। कुल मिलाकर यह बहुत अतिथिपरायण देश है और आगे बढ़ने के अवसर देता है। इसके साथ ही मैं यह भी कहूंगी कि मैं क्योंकि अश्वेत प्रवासी दक्षिण एशियाई हूं, इसलिए किसी यूरोपियन प्रवासी की तुलना में मेरा अनुभव अलग रहा है। लेखक के नाते इसके अपने लाभ हैं। मैं फर्क महसूस कर सकती हूं और उन अनुभवों को अपने लेखन में उतार सकती हूं।'' □

लेखिका: *कोलकाता निवासी रंजीता बिस्वास स्वतंत्र पत्रकार हैं। वह साहित्यिक सामग्री का अनुवाद करती हैं और कथा साहित्य लिखती हैं।*